वैश्विक हिंदी पत्रिका

(वैश्विक हिंदी परिवार का मासिक)

वर्ष 1-अंक 5 मई, 2024

इस अंक में

- मुख्य गतिविधियाँ - पृष्ठ 1
- संपादकीय - पृष्ठ 2
- अग्रलेख - पृष्ठ 2
- वैश्विक हिंदी परिवार कार्यक्रम: पृष्ठ 3
- वातायन कार्यक्रम : पृष्ठ 4
- विश्व परिक्रमा : पृष्ठ 5 एवं 6
- पुस्तक समीक्षा : पृष्ठ 7
- साक्षात्कार - पृष्ठ 8

आगामी अंक में

- विदेश में हिंदी नाटक (02.06.2024)
- मॉरीशस में हिंदी शिक्षण (09.06.2024)

दिव्यांगजन, प्रौद्योगिकी और भाषा

वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा रविवारीय कार्यक्रम में 28 अप्रैल 2024 को "दिव्यांगजन, प्रौद्योगिकी और भाषा, विषय पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता करते हुए अमेरिका के तकनीकी शिक्षाविद श्री अनूप भार्गव ने कहा कि दिव्यांग जनों की सुगमता के लिए नित नई आधुनिक तकनीकी की मांग जागरूकता का परिचायक है। हम आर्थिक दृष्टिकोण से फायदे के लिए केवल दिमाग से नहीं बल्कि दिव्यांगों के उपकार हेतु दिल से सोचें। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार, विद्वान, विदुषी, प्राध्यापक, शोधार्थी, प्रतियोगी परीक्षार्थी और भाषा प्रेमी आदि सैकड़ों की संख्या में जुड़कर लाभान्वित हुए।

आरम्भ में सिंगापुर से प्रो. संध्या सिंह ने सबका स्वागत किया। तत्पश्चात गृह मंत्रालय के सहायक निदेशक डॉ॰ मोहन बहुगुणा द्वारा बखूबी संचालन संभाला गया। उन्होने व्याख्यान हेतु माइक्रोसाफ्ट के निदेशक एवं सुप्रसिद्ध भाषा तकनीकीविद एवं लेखक श्री बालेंदु शर्मा दाधीच को सादर आमंत्रित किया। अपनी शानदार जीवंत प्रस्तुति में श्री दाधीच ने सचित्र बताया कि विकलांगता एक अवांछनीय चिकित्सा स्थिति है जो किसी व्यक्ति की क्षमताओं को सीमित करती है। अब नए समाजिक मॉडल के अनुसार गैर –समायोजित सामाजिक पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण विकलांगता होती है। शारीरिक अंग भंग,दुर्घटनावश, स्थितिजन्यता और शारीरिक गिरावट आदि इसकी अनेक श्रेणियाँ हैं। विकलांगता अदृश्य और अस्पष्ट भी होती है। दुनियाँ में लगभग 1.3 अरब लोग विकलांग हैं। इनके लिए सुगम्यता तब होती है जब उत्पाद, सेवाएँ, वातावरण और डिजिटल मीडिया आदि इनके अनुकूल हों। जैसे हाथ से बटन के स्थान पर विकलांग पैर आदि से दबाने वाले यंत्र का प्रयोग कर सकें। उन्होने विश्व प्रसिद्ध भौतिकीविद स्टीफेंस हाकिन्स का सचित्र उदाहरण दिया। विकलांगता हममें से किसी को भी हो सकती है। मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे भी बहुत प्रभावित करते हैं। श्री दाधीच द्वारा दिखाया गया कि विभिन्न प्रकार के विकलांगों जैसे अंधों, मूक-बधिरों और अपंगों आदि की सक्षमता हेतु विविध प्रकार की आधुनिक सुविधाएँ कम्प्यूटर और मोबाइल आदि में आ गई हैं।इस दिशा में नित नए अनुसंधान जारी हैं।

विमर्श में अमेरिका से एक दिव्यांग बच्चे की माँ श्रीमती पोपी सुवर्णा ने कहा कि बेहतर जिंदगी के लिए बीमारी विशेष से ग्रसित बच्चों हेतु अनुसंधान आवश्यक है। सहभागिता करते हुए आई आई टी खड़गपुर के श्री राजीव रावत ने आशंका प्रकट की कि आधुनिक सुविधाएं कहीं हमें विकलांगता की ओर तो नहीं ले जा रही हैं। पांडिचेरी विश्वविद्यालय के प्रो. सी. जयशंकर बाबू ने कहा कि साहित्य के दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु नए अनुसंधान की आवश्यकता है। दिल्ली में राजभाषा से जुड़े श्री राकेश शर्मा ने कहा कि भविष्य में केवल सोचकर ही बिना की बोर्ड के टाइप की व्यवस्था संभाव्य है। हैदराबाद से प्रो. कोकिला का कहना था कि दिव्यांगों द्वारा लिखने में वर्तनी की समस्या का भी समाधान होना चाहिए।

समूचा कार्यक्रम विश्व हिन्दी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, केंद्रीय हिन्दी संस्थान,वातायन और भारतीय भाषा मंच के सहयोग से वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के संयोजन में संचालित हुआ। कार्यक्रम प्रमुख की सशक्त भूमिका ब्रिटेन से साहित्यकार दिव्या माथुर द्वारा बखूबी निभाई गई। भोपाल से साहित्यकार डॉ. जवाहर कर्नावट के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ । समूचे कार्यक्रम में अनेक अनजान पहलू प्रकाश में आए। यह कार्यक्रम "वैश्विक हिन्दी परिवार, शीर्षक के अंतर्गत" यू-ट्यूब पर उपलब्ध है।

–डॉ॰ जयशंकर यादव

'इंडियन डायसपोरा इन फ्रीडम स्ट्रगल'

अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के 10 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 30 मार्च से 2 अप्रैल तक मलेशिया की राजधानी कुआलालम्पुर की यात्रा में कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लिया। इसी क्रम में मलाया, विश्वविद्यालय, कुआलालम्पुर के कला संकाय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद,भारत के संयुक्त तत्वाधान मे 'द रोल ऑफ इंडियन डायसपोरा इन इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें मलेशिया, भारत, थाईलैंड और सिंगापुर के विद्वानों ने भाग लिया।सम्मेलन का शुभारंभ आसियान(ASEAN) राष्ट्र समूह के पूर्व महासचिव श्री अजीत सिंह ने किया। विश्वविद्यालय के कला संकाय के प्रमुख डॉक्टर डैनी वांग ने अतिथियों का स्वागत किया। परिषद के महासचिव श्री श्याम परांडे.उपाध्यक्ष संजय भल्ला, मानद निदेशक श्री नारायण कुमार, सचिव प्रो. गोपाल अरोड़ा, डॉ. जवाहर कर्नावट, प्रो. अमरजीव लोचन, सिंगापुर से प्रो. राजेश राय, थाईलैण्ड से डॉ. सोफाना श्रीचम्पा, डॉ. अंबा पांडे, सुश्री चूड़ामणि शिवराम, डॉ. राकेश पांडे और श्री त्रिलोकीनाथ मल्होत्रा ने इस सेमिनार में अपने विचार रखे।

सभी विद्वानों ने एकमत से इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसे विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रमों में विस्तार से सम्मिलित किया जाना चाहिये।

एक अन्य कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद और गोपिओ 'मलेशिया ने मिल कर नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में सामूहिक विमर्श का आयोजन किया जिसमें मलेशिया में भारतीय उच्चायोग की काउंसलर सुश्री अमृता दाश, गोपियो मलेशिया के अध्यक्ष श्री गुणसेकरन, महासचिव रवींद्र, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के महासचिव श्याम परांडे, सचिव गोपाल अरोड़ा, प्रो. राजेश रॉय, प्रो. सोफाना श्रीचंपा, मलेशिया हेरिटेज ग्रुप के प्रभाकरण और नेताजी फाउंडेशन से श्री चंद्रशेखर ने भाग लिया।

प्रतिनिधिमंडल ने मलेशिया स्थित भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री बी. एन. रेड्डी से भेंट की और भारत-मलेशिया के संबंधों के विषय में विस्तार से चर्चा की । इस अवसर पर श्री रेड्डी ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद प्रवासियों के साथ भारत के संबंध सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि परिषद हर वर्ष ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करती रहेगी। परिषद का प्रतिनिधिमंडल गोपियो मलेशिया के मुख्यालय भी गया।

भारतीय भाषा मंच, मेघालय प्रांत और शिलांग कॉमर्स कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी वार्तालाप पाठ्यक्रम प्रमाणपत्र कार्यक्रम....

दिनाँक 14 मई 2024 को समापन एवं प्रमाणपत्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।इस कार्यक्रम में शिलांग कामर्स कॉलेज के 30 प्रतिभागियों को भारतीय भाषा मंच,मेघालय प्रान्त की तरफ से प्रमाण पत्र वितरित किया गया।कार्यक्रम में सम्मिलित प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि हिंदी सीखने में इस कार्यक्रम से उन्हें काफी मदद मिली है साथ ही साथ उन्होंने इसे अपने भविष्य के लिए भी महत्वपूर्ण बताया।इस समापन कार्यक्रम में भारतीय भाषा मंच ,मेघालय प्रांत के संयोजक डॉ.आलोक सिंह,शिलांग कॉमर्स कॉलेज के इस पाठ्यक्रम के प्रमुख डॉ.बाबूराम जी एवं हिंदी शिक्षिका सुश्री सिंथिया खारबुली भी उपस्थित रहे।

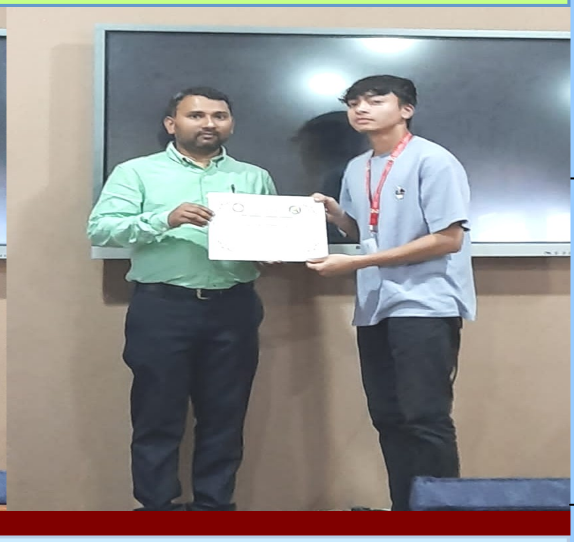

संपादक की कलम से...

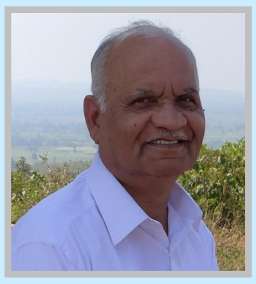

गत अंकों की भाँति यह अंक भी विविध पृष्ठवार पठनीय सामग्री सहित सादर सप्रेम प्रस्तुत है। यदि अपवादों को छोड़ दें तो हम जन्मजात एक समान स्वर क्रंदन और हृदय रूपी एक ही वाद्य यंत्र लेकर आते हैं। साथ ही आरंभ में घर, परिवार, समाज व परिवेश आदि का भाषाई आँचल ओढ़ लेते हैं। दुनियाँ की सभी भाषाओं और साहित्य में अच्छाई है। मनुष्य को इसके अमल में कठिनाई स्वाभाविक है जो उसकी फितरत के अनुसार अहम है। आदमी की फितरत बदलने का कोई फार्मूला नहीं है। अतएव सुधीजन विकल्प की तलाश करते रहें। उधार की पूँजी से व्यापार चल सकता है किन्तु उधार के ज्ञान से किसी को संतुष्ट नहीं किया जा सकता। भाषा के लिए भी जानना, समझना और कर्तव्य पालना जरूरी है।

प्रकृति के त्रिगुणमयी (सत्व, रज, तम) होने की बात सुनाई पड़ती है। हर आदमी में तीनों के अनुपात अलग हैं। इसलिए हर आदमी कुछ भिन्न है।सत्व के मान का नहीं कि वह रज को बेदखल कर सके और न रज के मान का है कि वह तम को बेदखल कर सके। सत्व और रज मिलकर भी तम को बेदखल नहीं कर सकते। आधुनिक रोशनी की चकाचौंध में सत्व कमोबेश वैराग्य में तिरोहित हो जाता है। हर जगह स्थूल शरीर के जटिल ताने- बाने से सूक्ष्म चेतना आती है।

आइये, हम भाषाई शुद्ध चैतन्य जगाएँ और कार्यान्वयन बढ़ाएँ।

-डॉ. जयशंकर यादव

अग्रलेख

दुनियाँ को हिंदी से जोड़ने के प्रयास केवल व्यक्तिगत उपस्थिति वाले नहीं हो सकते, बल्कि तकनीक के माध्यम से बड़े वर्ग को जोड़ा जा सकता है। उसकी शुरुआत वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा की जा रही है और एक वैबसाइट वैश्विक हिंदी डॉट काम के रूप में पंजीकृत करवा ली गयी है । इसकी भावना है- हिंदी का वैश्विक मंच। प्रवासी कविता, कहानी, उपन्यास, शिक्षण, मीडिया और विविध क्षेत्रों में सामग्री एक स्थान पर उपलब्ध हो सके, इसके लिए एक समर्पित और योग्य टीम निरंतर काम कर रही है। इसकी पहुँच लाखों लोगों तक हो, ऐसा प्रयास रहेगा । मासिक न्यूज़ लैटर के साथ ही यह दूसरी महत्वपूर्ण परियोजना होगी जो ठोस उद्देश्यों और दिशा के साथ लक्ष्य को प्राप्त करेगी। यह विशाल कार्य है और आप सबका सहयोग और भागीदारी अपेक्षित है। आइए, इस समूह के माध्यम से हिंदी के विकास की दिशा में ठोस कदम उठाएँ ।

अनिल शर्मा 'जोशी'
अध्यक्ष, वैश्विक हिन्दी परिवार

आपकी प्रतिक्रिया

वैश्विक हिन्दी पत्रिका के माध्यम से विश्व भर में हुए अनेक हिन्दी कार्यक्रमों की झलक मिली है। हिन्दी से जुड़े अंतरराष्ट्रीय समाचारों को स्थान देना अत्यंत सराहनीय है। रंगों से भरे गुलदस्ते की तरह पत्रिका के पृष्ठ सुगंध से भरपूर हैं। सूर्यबाला जी का साक्षात्कार रोचक, पठनीय एवं संग्रहणीय है। टूटी पेंसिल ,कहानी संग्रह की समीक्षा प्रकाशित करने हेतु संपादक मण्डल का आभार। अशेष शुभकामनाएँ।

-डॉ॰ हंसा दीप, टोरंटो, कनाडा

आपने वैश्विक हिन्दी की लघु पत्रिका में पूरी दुनियाँ समेट ली है। वैश्विक सितारों का कार्यक्रम चमक रहा है। इसमें सूचना के साथ साहित्य संस्कृति का भी आदान प्रदान भी है। लेख, रिपोर्ट, साक्षात्कार, विमर्श सब कुछ गागर में सागर और विश्व परिक्रमा-सा है। आप लोगों ने घर बैठे पूरी दुनियाँ घूमा दी है। पूरी टीम को बधाई।

-मनोज भावुक, संपादक, भोजपुरी जंक्शन पत्रिका

वैश्विक हिंदी पत्रिका का नवीन अंक देखा। गागर में सागर समेटने का प्रयास सराहनीय है। सूर्य बाला जी समर्थ लेखिका हैं। बच्चो के लिए भी उन्होंने गजब का लेखन किया है। मैंने अपने संपादन में आए संकलन 'बालिकाओं की श्रेष्ठ कहानियाँ' में उनकी कहानी खुराफातों की वर्कशाप शामिल की थी। उसकी खूब चर्चा हुई थी। उनका साक्षात्कार पढ़कर मन आह्लादित हुआ। दिव्या जी को बधाई। बधाई आपकी पूरी टीम को भी, पत्रिका को लेकर संपादकीय दृष्टि और सृष्टि दोनों ही श्लाघनीय है।

-डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', वरिष्ठ बाल साहित्यकार, शाहजहांपुर (उ.प्र.)

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से वैश्विक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। प्रवासी साहित्य के उन्नयन के लिए इस तरह की पत्रिका का प्रकाशन स्वागत योग्य है। इस अंक में प्रकाशित सभी सामग्री पठनीय एवं मननीय है और वैश्विक स्तर पर हो रहे हिंदी के प्रचार-प्रसार को पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता होती है। कभी प्रवासी हिंदी पत्रिकाओं पर भी सामग्री प्रकाशित करें। संपादक मंडल को विश्व स्तरीय सामग्री जुटाने और उसे कुशलतापूर्वक संपादित करने के लिए विशेष बधाई और आत्मीय शुभकामनाएं।

-डॉ हरिसिंह पाल, संपादक - सौरभ (न्यूयॉर्क, अमेरिका) एवं महामंत्री - नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित रविवारीय कार्यक्रम

(विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वातायन, भारतीय भाषा मंच और केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में)

फीजी में हिंदी: दशा और दिशा

(7 अप्रैल 2024)

पद्मश्री से सम्मानित जापान के ओसाका विश्वविद्यालय में एमिरेट्स प्रोफेसर तोमियो मिजोकामी की अध्यक्षता में वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा व्याख्यान आयोजित हुआ। इस अवसर पर प्रो॰ मिजोकामि ने कहा कि बेशक हिन्दी दुनियाँ में सर्वाधिक जानी जाने वाली भाषाओं में एक है तथा भारत और फिजी की राजभाषा भी है किन्तु संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा न होना खेदजनक है। फ़िजी में भी हिन्दी और फ्रेंच की अधिकता के बावजूद अङ्ग्रेज़ी का वर्चस्व है। फिजी में बारहवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन शानदार ढंग से आयोजित हुआ। निश्चय ही फ़िजी में हिन्दी का भविष्य उज्जवल है। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार,विद्वान-विदुषी,प्राध्यापक, शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

आरम्भ में फ़िजी में निदेशक रह चुके डॉ॰ संतोष कुमार मिश्रा द्वारा स्वागत किया गया। इसके बाद फ़िजी नेशनल यूनिवर्सिटी में साहित्य विभाग की डॉ॰सुभाषिणी कुमार ने सधे शब्दों में संचालन का दायित्व संभाला।फ़िजी सरकार के शिक्षा मंत्रालय में हिन्दी की पाठ्यचर्या विशेषज्ञ सुश्री स्यामला लता ने कहा कि बेशक हमारे पूर्वजों ने हिंदी को खून पसीने से सींचा है किन्तु यहाँ 176 सेकेंडरी स्कूलों में हिन्दी विद्यार्थियों की संख्या घट रही है। इसके लिए अभिभावकों,शैक्षिक सामाजिक संस्थाओं और रामायण मंडलियों आदि को मिलकर जागरूक होना जरूरी है। यूनिवर्सिटी ऑफ फ़िजी की सह प्राध्यापिका श्रीमती शोभना प्रसाद का कहना था कि मनोरंजन और सोशल मीडिया से हिन्दी का प्रचार -प्रसार बढ़ रहा है। स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र सुवा,फ़िजी की निदेशक सुश्री निशी बाला का मत था कि गिरमिटिया देशों से भारत का गहरा संबंध है। इसका मूल कारण समान भाषा भी है।युवा पीढ़ी को हिन्दी से जोड़ना निहायत जरूरी है।

सीधे विमर्श के अंतर्गत फ़िजी में प्रधान शिक्षक के रूप में कार्यरत श्री बिमल अविनेश चंद ने कहा कि हिन्दी के उत्थान के लिए सामाजिक संस्थाएं,पाठशालाएं और शिक्षा विभाग का समन्वित रूप से कार्य करना जरूरी है।फ़िजी नेशनल यूनिवर्सिटी की व्याख्याता और आर्य समाज की महासचिव श्रीमती विद्या सिंह का मन्तव्य था कि शोध कार्य को बढ़ावा देना,शिक्षकों को आधुनिक प्रशिक्षण देना और युवाओं को प्रोत्साहित करना जरूरी है। फ़िजी सरकार की पूर्व वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी श्रीमती रोहिणी कुमार ने कहा हिन्दी शिक्षण में लक्ष्यों में गिरावट सोचनीय है। मंत्रालय, अभिभावक और शिक्षार्थियों का त्रिकोणीय बल एक दिशा में होना चाहिए। लंबासा में भाषा विभागाध्यक्ष श्री प्रवीनानन्द का मानना था कि फ़िजी में लुप्त हो रही विरासत और भाषा को बचाना अत्यंत आवश्यक है। विश्वविद्यालय की पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष मनीषा रामरक्खा ने 1980 की भांति हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में पुन: पढ़ाने का सुझाव दिया और स्नातकोत्तर स्तर पर फ़िजी में ही छात्रवृत्ति दी जाए।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष एवं फ़िजी में राजनयिक रह चुके श्री अनिल जोशी ने सभी से पटल पर हर्षदायी मुलाक़ात पर मन: संतोष प्रकट किया। उन्होने मन्तव्य दिया कि लिपिबद्धता और भाषा कौशल को बढ़ावा देते हुए पर्यटन आदि रोजगारपरक ऑनलाइन पाठ्यक्रम चलाना सहायक होगा।विश्व हिन्दी सम्मेलन फ़िजी में लिए गए निर्णयों को धरातल पर उतारा जाए। तकनीकी सहयोग का दायित्व कृष्णा कुमार द्वारा बखूबी संभाला गया। समूचा कार्यक्रम विश्व हिन्दी सचिवालय ,अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद,केंद्रीय हिन्दी संस्थान,वातायन और भारतीय भाषा मंच के सहयोग से वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के मार्गदर्शन और सुयोग्य समन्वयन में संचालित हुआ। अंत में भारत से लेखक डॉ॰सुरेश कुमार मिश्र उरतृप्त द्वारा आत्मीयता से धन्यवाद दिया गया। यह कार्यक्रम “वैश्विक हिन्दी परिवार शीर्षक से “यू ट्यूब ,पर उपलब्ध है।

(रिपोर्ट : जयशंकर यादव

तुलसी और वाल्मीकि के राम

(14 अप्रैल 2024)

वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा राम नवमी के उपलक्ष्य में “तुलसी और वाल्मीकि के राम ,विषय पर रविवारीय कार्यक्रम में 14 अप्रैल 2024 को प्रखर लेखक,आलोचक एवं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति प्रो॰राधा बल्लभ त्रिपाठी जी से संवाद आयोजित किया गया। साहित्यकार और रेल मंत्रालय में राजभाषा के निदेशक डॉ॰ बरुण कुमार द्वारा शालीन ढंग से संवादी की भूमिका का निर्वहन किया गया। वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष एवं चिंतक श्री अनिल जोशी ने सान्निध्य प्रदान किया। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार,विद्वान-विदुषी,प्राध्यापक,रामानुरागी,शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि काफी संख्या में जुड़े थे।

आरम्भ में भोपाल से साहित्यकार डॉ॰ जवाहर कर्नावट द्वारा आत्मीयतापूर्वक स्वागत किया गया। तत्पश्चात लेखक एवं चिंतक डॉ॰ बरुण कुमार द्वारा मर्यादित ढंग से संचालन का दायित्व संभालते हुए आचार्य प्रवर का संक्षिप्त परिचय कराया गया। ज्ञातव्य है कि मध्य प्रदेश के राजगढ़ में 1949 में जन्मे और 60 वर्षों से अध्यापन –लेखन से जुड़े श्री त्रिपाठी जी संस्कृत आचार्य परंपरा के चोटी के विद्वान तथा आधुनिकता का संस्कार देने वाले आचार्य प्रवर हैं। वर्ष 1994 में "साहित्य अकादमी पुरस्कार, से पुरस्कृत त्रिपाठी जी ने संस्कृत –हिन्दी में 100 से अधिक प्रामाणिक पुस्तकों का प्रणयन किया है।चार खंडों में “नाट्य शास्त्र विश्वकोश,इत्यादि वैश्विक धरोहर हैं। उनके व्यक्तित्व में “सहज सुभाय छुआ छल नाहीं,सहज ही चरितार्थ होता है।

संवाद की शुरुआत में डॉ॰ बरुण कुमार ने प्रो॰ राधा बल्लभ त्रिपाठी जी से सहज भाव से वाल्मीकि के राम और तुलसी के राम में मूलभूत अंतर जानने की जिज्ञासा जाहिर की। आचार्य प्रवर ने संवाद पर हर्ष प्रकट करते हुए कहा कि वाल्मीकि के राम, ऋषि परंपरा और आर्ष महाकाव्य के राम हैं जो भूत, वर्तमान और भविष्य के आर -पार देखकर मनुष्य को सच्ची राह दिखाते हैं। क्रौंच पक्षी की व्यथा देखकर ऋषि वाल्मीकि कवि हो गए और नारद जी की सलाह पर एक मनुष्य में सारी संभावनाएं निहित रखने वाले “राम, के चरित्र का प्राणियों के हित में वर्णन किए। तुलसी के राम, संत परंपरा के समाज तारक रूप में अवतारी मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।नवनीत से कोमल हृदय वाले राम त्राण दिलाते हैं। मनुष्य में संघर्ष के कारण ईश्वरत्व आ जाता है।

वाल्मीकि और तुलसी के कालखंड के अंतर के मद्देनजर विकास क्रम और दृष्टिकोण के सवाल पर आचार्य प्रवर ने कहा कि वाल्मीकि के राम सामान्य जन की नजर में क्रमशः ऊपर उठने लगे जबकि तुलसी के राम आक्रमणकारियों और रौंदने वालों से त्रस्त जनता की आह और कराह के अवलंबन थे। उनमें ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय सहज ही दिखता है। दृष्टिकोण का अंतर स्वाभाविक है। अब भी पुनरावलोकन किया जा सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम और परंपरा से विद्रोह के प्रश्न पर उन्होने कहा कि मर्यादाएं स्थापित की जाती हैं। राम ने एक ही पत्नी की मर्यादा का पालन किया जबकि बहुपत्नी प्रथा से विकृतियाँ आ गई थीं। अहिल्या धोखे से पथरा गई थीं। महायोगिनी सबरी जाति-पांति की रूढ़ियों के खंडन और भक्त वत्सलता आदि से भी जुड़ी है।

शंबूक बध को जोड़ने और न जोड़ने के सवाल पर आचार्य जी ने दृष्टांत सहित कहा कि इसे जोड़ना मूर्खता का प्रतीक है। योगेश्वर कृष्ण की तरह योगेश्वर राम के प्रश्न पर उन्होने कहा कि काल क्रम के अनुसार राम के साथ योगेश्वर जोड़ना उचित नहीं। ऐतिहासिक राम मंदिर के निर्माण पर उनका स्पष्ट मत था कि राम कथा केवल इतिहास ,आख्यान या मिथक नहीं है। इसका परिप्रेक्ष्य इन सबकी सीमाओं से परे है। इस अवसर पर आचार्य जी द्वारा अमेरिका से जुड़े प्रो. सुरेन्द्र गंभीर ,यूक्रेन से प्रो॰ यूरी बोत्विंकिन ,जापान से पद्मश्री प्रो॰ तोमियो मिजोकामि, उज्बेकिस्तान से प्रो॰ उलफत तथा भारत से डॉ॰ बुद्धिनाथ मिश्र और ललित भूषण की शंकाओं का बेबाक विश्लेषण सहित समाधान किया गया।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष एवं कवि श्री अनिल जोशी ने आचार्य जी द्वारा आज प्रवाहित ज्ञान धारा को अविस्मरणीय बताया और कहा कि आजादी के बाद से हमारे देश में राम के बारे में भ्रामक और आधारहीन दृष्टिकोण भी फैलाये गए। तुलसी को हिन्दू समाज का पथभ्रष्टक तक कहा गया । उन्होने सरिता पत्रिका एवं भारत एक खोज का जिक्र किया और गिरमिटिया की व्यथा में निर्बल के बल राम का सशक्त उदाहरण दिया। श्री जोशी द्वारा राम की शक्ति पूजा और राम के चरित्र की सही व्याख्या हेतु ध्यान आकृष्ट किया गया । उन्होने आचार्य प्रवर प्रो॰ त्रिपाठी जी का हार्दिक अभिनंदन किया।

अंत में भारत से डॉ॰ जयशंकर यादव द्वारा आत्मीयता से “प्रभु की कृपा भयउ सब काजू ,सहित कृतज्ञता प्रकट की गई।समूचे कार्यक्रम में ज्ञान दान ,राममय बेबाक विश्लेषण और जीवन की धन्यता की अनुभूति हुई। ध्यान मग्न होकर सुनने वाले श्रोताओं के बीच “हरि अनंत हरि कथा अनंता,चरितार्थ हुआ।

(रिपोर्ट लेखन –डॉ॰ जयशंकर यादव)

हिंदी और बंगाली अंतर्संबंध : स्थिति और चुनौतियाँ

(21 अप्रैल 2024)

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बाबा साहब अंबेडकर शिक्षा विश्वविद्यालय कोलकाता की कुलपति और हिन्दी बंगाली की साहित्यकार प्रो॰ सोमा बंद्योपाध्याय ने कहा कि भारत विविधता में एकता वाला महामिलन का देश है। भारतीय भाषाओं का अटूट संबंध है।इन दोनों भाषाओं के साहित्य का बहुत बड़े पैमाने पर आपसी अनुवाद हुआ है जो जन मानस तक पहुंचाना चाहिए। हमें भ्रांतियों से बचना चाहिए।प्राय: बंगाली साहित्यकारों को अपनी रचनाओं का हिन्दी अनुवाद सुखद अनुभूति देता रहा है।तुलनात्मक अध्ययन के विस्तार की नितांत आवश्यकता है।अच्छा साहित्य वैश्विक होता है। अतएव गहरा गोता लगाने से मोती मिलेगा। साहित्यकार और रेल मंत्रालय में राजभाषा के निदेशक डॉ॰ बरुण कुमार का कहना था कि भौगोलिक दृष्टि से हिन्दी के व्यापक क्षेत्र की सीमाओं की भाषाओं में हिन्दी बंगला संबंध लोक मन में अपेक्षाकृत अधिक प्रगाढ़ है। इन दोनों भाषाओं के लोक मन का जुड़ाव सदियों से साहित्य ,संगीत ,कला ,नाटक, सिनेमा और अध्यात्म आदि में गुंफित मिलता है। अपनी श्रेष्ठता का बोध भी स्वाभाविक है। व्यक्ति ,समाज और परम्पराओं को व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर भी सुनने की निहायत जरूरत है। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार,विद्वान-विदुषी,प्राध्यापक,शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि काफी संख्या में जुड़कर लाभान्वित हुए।

आरम्भ में भारत से डॉ॰जयशंकर यादव द्वारा आत्मीयतापूर्वक स्वागत किया गया। तत्पश्चात कांचनपाड़ा कालेज के प्राध्यापक डॉ॰ गोस्वामी जैनेन्द्र कुमार भारती द्वारा संचालन का दायित्व संभाला गया। रचनाकार साहित्य समिति कोलकाता के अध्यक्ष श्री सुरेश चौधरी का मन्तव्य था कि भक्तिकाल से हिन्दी बंगला संबंध प्रगाढ़ मिलते हैं । बंगाली साहित्यकारों ने हिन्दी को हर क्षेत्र में प्राथमिकता दी और हिन्दी के साहित्यकार कोलकाता आदि में रहकर विपुल सृजन किए।उन्होने बंगला से हिन्दी में अपनी छांदिक रचनाएँ भी सोदाहरण सुनाईं। साहित्य अकादमी कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव डॉ॰ देवेंद्र कुमार देवेश का मानना था कि

बंगाली के साहित्यकार हिन्दी और भारतीय भाषाओं की अपेक्षा विदेशी साहित्य को अधिक तरजीह देते हैं। भाषाई प्रगाढ़ता बढ़ाने का सतत प्रयास होना चाहिए। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सह संयोजक श्री ए॰ विनोद ने कहा कि भारतीय भाषाओं का आपसी संबंध अटूट है। विद्वानों और विभिन्न आयोगों की सिफ़ारिशों के मद्देनजर इसे मजबूती देनी होगी। नई शिक्षा नीति से भाषाई क्षेत्र में बहुत आशाएँ हैं। हम भारतीय भाषाओं को गौरवान्वित कर नए भारत का संकल्प लें।

हिन्दी बंगाली विमर्श में भाग लेते हुए सरोजिनी नायडू महिला विश्वविद्यालय के प्राध्यापक विवेक साव का कहना था कि पिछले दो सौ वर्षों में अनेक विभूतियों ने इन दोनों भाषाओं में सन्निकटता लाई है। प्रेम और सहिष्णुता की धरती बंगाल में प्रयोगधर्मिता रही है।दोनों के बीच सेतु को मजबूती देनी चाहिए। राजभाषा विभाग में हिन्दी प्रशिक्षण के सहायक निदेशक श्री विश्वजीत मजूमदार ने कहा कि शब्दों और रचना की दृष्टि से दोनों भाषाएँ अल्प प्रयास में सीखने में सरल हैं। लिंग और वचन की कुछ कठिनाइयाँ स्वाभाविक हैं। काजी नज़रुल विश्वविद्यालय की हिन्दी प्राध्यापक डॉ॰ काजू कुमारी साव ने कहा कि हिन्दी बंगला एक ही भारोपीय परिवार की भाषाएँ हैं।नवजागरण काल में बहुत निकटता आई। हमें लक्ष्य भाषा की प्रकृति का विशेष ध्यान रखना होगा। पश्चिम बंगाल सरकार के मुख पत्र “पश्चिम बंगाल, के संपादक डॉ॰ जय प्रकाश मिश्र का कहना था कि बेशक हिन्दी बंगाली संबंध मुलायमियत से रहे किन्तु आपसी सम्प्रेषण का अभाव दिखाई देता है।यहाँ हिन्दी को विरोध भी झेलना पड़ा। दोनों के हाथ ही नहीं बल्कि हृदय भी मिलने चाहिए।

समूचा कार्यक्रम विश्व हिन्दी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, केंद्रीय हिन्दी संस्थान,वातायन और भारतीय भाषा मंच के सहयोग से वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के संयोजन में संचालित हुआ।कार्यक्रम प्रमुख की सशक्त भूमिका ब्रिटेन से साहित्यकार दिव्या माथुर द्वारा बखूबी निभाई गई। अंत में हैदराबाद से साहित्यकार डॉ॰ सुरेश मिश्र “उरतृप्त, द्वारा कृतज्ञता प्रकट की गई।समूचे कार्यक्रम में हिन्दी -बंगला के अनजान पहलू प्रकाश में आए। यह कार्यक्रम “वैश्विक हिन्दी परिवार शीर्षक से “यू ट्यूब ,पर उपलब्ध है।

(रिपोर्ट : जयशंकर यादव)

विश्व साहित्य के नगीने : अंतोन पावलविच चेख़व

वातायन-यूके के तत्त्वावधान में 27 अप्रैल, 2024 को वातायन संगोष्ठी-180 का आयोजन किया गया। विगत तीन वर्षों से अनवरत चल रही वातायन संगोष्ठियों को वैश्विक आधार पर विशेष ख्याति मिली है और देश-विदेश के साहित्यिक गलियारों में इनकी चर्चा का बाज़ार गर्म रहा है। 'वातायन-यूके' की टीम और ख़ासतौर से ब्रिटेन की इस साहित्यिक संस्था की संचालक सुश्री दिव्या माथुर इसमें नवप्रयोग करती रही हैं। इसी के मद्देनज़र, वातायन संगोष्ठियों को और दिलचस्प बनाने के लिए दिनांक 27-04-2024 को जो संगोष्ठी आयोजित की गई वह इनकी एक नई कड़ी के रूप में हमारे सामने आई। यह नई कड़ी है-'विश्व साहित्य के नगीने'। इसके तहत विश्व की विभिन्न भाषाओं के लिए मील के पत्थर कहे जाने वाले साहित्यकारों के साहित्यिक अवदान से दुनियाभर के पाठकों का परिचय कराना है।

वातायन संगोष्ठी-180 के अंतर्गत रूसी साहित्य के प्रख्यात लेखक अंतोन पावलविच चेख़व की साहित्यिक यात्रा और उनके रचना संसार पर चर्चा की गई। सर्वप्रथम उनकी कहानी 'दि डेड बॉडी'के अनुवाद ('एक लाश')की नाटकीय प्रस्तुति ऋचा जैन और प्रगति टिप्पणीस द्वारा की गई । सुश्री ऋचा ब्रिटेन में आईटी प्रोफेशनल, लेखिका और अनुवादक हैं जबकि सुश्री प्रगति रूस में इंजीनियर हैं एवं अनुवाद-कार्य में सक्रिय हैं जिनकी कई अनूदित पुस्तकें प्रकाशित हैं।

कार्यक्रम के आरंभ में सुश्री ऋचा ने संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री गीत चतुर्वेदी तथा मुख्य अतिथि प्रो० ल्यूदमिला खोखलोवा का अभिनंदन किया । लेखक और आलोचक श्री गीत चतुर्वेदी अंतरराष्ट्रीय वातायन सम्मान एवं भारत भूषण और कृष्णा प्रताप जैसे पुरस्कारों से सम्मानित हैं जबकि प्रो० ल्यूदमिला मॉस्को यूनिवर्सिटी में हिंदी, उर्दू, पंजाबी और विभिन्न भाषाओं की प्राध्यापिका हैं। सुश्री ऋचा ने संगोष्ठी की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताया कि यह एक नई शृंखला है। इसके अंतर्गत,संगोष्ठी की दोनों प्रस्तोताओं ऋचा और प्रगति ने अंतोन पावलविच चेख़व की कहानी 'दि डेड बॉडी' का सुरुचिपूर्ण नाटकीय वाचन किया। 'दि डेड बॉडी'शाह बलूत वृक्ष के नीचे पड़ी हुई तथा सफेद कफ़न से ढंकी हुई एक लाश पर केंद्रित विश्व-प्रसिद्ध कहानी है। उस लाश की निग़रानी कोई दो व्यक्ति कर रहे हैं जो आपस में दिलचस्प बहसबाजी करते हैं। युवा व्यक्ति अपनी बातचीत में प्रौढ़व्यक्ति पर हावी रहता है। 'आग' और लाल रंग का वर्णन प्रतीकात्मक है जो तत्कालीन रूसी देशकाल को बिंबित करते हैं। पूरी कहानी एक विशेष प्रकार के गंभीर वातावरण का सृजन करती है तथा पाठकों को रोमांच और जिज्ञासा से आद्योपांत बांधे रहती है। चित्रकारी में विशेष रुचि रखने वाले चेख़व जिस चित्रोपम वर्णन के लिए विश्व-विख्यात हैं उसके लिए यह कहानी विशेष महत्त्व रखती है।

कहानी का वाचन हृदयस्पर्शी था जिसकी सराहना मंच पर उपस्थित सभी श्रोता-दर्शकों ने तहे-दिल से की। तदनंतर, ऋचा ने चेख़व की कहानी-कला पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनकी कहानियों में पात्रों के चित्रण, कथा-वस्तु, देशकाल, संवाद और कथोपकथन में कसावट होती है। वाचित कहानी में अलाव की रोशनी विशेष महत्त्व रखती है जिसकी पृष्ठभूमि में सारी घटनाएं घटित होती हैं। पेशे से चिकित्सक चेख़व की ख्याति एक नाटककार और कहानीकार के रूप में है।उनका जीवन-काल संक्षिप्त था; किंतु, उनका रचना-संसार विशाल है। ऋचा ने कहा कि उन्होंने 500 शैलियों में सृजन किया। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत रहते हुए लेखन-कार्य जारी रखा। वर्ष 1850 तक उन्हें कहानियां लिखने में मक़बूलियत मिल चुकी थी।

प्रस्तोता प्रगति टिप्प्णीस ने कहा कि चेख़व ने अपने लेखन को नया आयाम देने के लिए 1887 में अधिक गंभीर शैलियों और विषयों पर अपनी कलम आज़मानी शुरू की। 'स्टेप' कहानी ने उन्हें कथा-लेखन में एक नया मोड़ दिया जिसे पाठकों ने भी खूब सराहा। प्रो० ल्यूदमिला खोखलोवा ने वातायान-यूके की साहित्य में भूमिका को रेखांकित करते हुए बताया कि यह अनुवाद ही है जिसके माध्यम से हम देशों और व्यक्तियों को परस्पर जोड़ते हैं। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी में चेख़व के विषय में चर्चा हुई और चेख़व मेरे प्रिय लेखक हैं। चेख़व ने भले ही अपना लेखन रूसी भाषा में किया है किन्तु वे दुनियाभर में जाने जाते हैं।

श्री गीत चतुर्वेदी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ऋचा और प्रगति के कथा-पाठ की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने उनके कहानी पाठ को डूबकर सुना। उन्होंने कहा कि चेख़व की कहानियों में विडम्बना का पोज़ अद्भुत तरीके से आता है। चूंकि इन दिनों वे अस्पतालों का चक्कर लगाते रहे हैं इसलिए वहाँ के दृश्यों को देखकर चेख़व की कहानियां, उनके पात्र और संवाद उन्हें याद आते रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि अगर अनुवाद की सुविधा नहीं होती तो दुनियाभर का साहित्य एक-दूसरे के पास आ-जा नहीं पाता। उन्होंनेबलपूर्वक कहा कि चेख़व की कहानियां उनके मन-मस्तिष्क में घूमती रहती हैं।

कार्यक्रम का समापन सुश्री ऋचा जैन द्वारा दिए गए धन्यवाद-ज्ञापन से हुआ। इस संगोष्ठी के आद्योपांत साक्षी रहे श्रोता-दर्शकों में उल्लेखनीय हैं- तोमियो मिज़ोकॉमी, पद्मेश गुप्त, डॉ० जयशंकर यादव, निखिल कौशिक, अनीता गोपालन, शैल अग्रवाल, डॉ० कुश चतुर्वेदी, आलोक गुप्ता, अनूप भार्गव, पूजा अनिल और जे० दवे आदि। सुश्री ऋचा ने यह भी बताया कि चेख़व से संबंधित एक और संगोष्ठी छः हफ्ते बाद 'वातायन-यूके' के बैनर-तले आयोजित की जाएगी। उन्होंने अगली संगोष्ठी के विषय और तिथि के बारे में भी जानकारी दी जो विज्ञान कथा लेखन और इसमें आने वाली चुनौतियों पर आधारित होगी।

(प्रेस रिपोर्ट-डॉ. मनोज मोक्षेंद्र)

विश्वरंग संगोष्ठी जर्मनी, 2024

विश्वरंग द्वारा आयोजित देशवार मासिक संगोष्ठी के अंतर्गत 'विश्वरंग संगोष्ठी जर्मनी 2024' का आयोजन 27 अप्रैल को ऑनलाइन के माध्यम से किया गया। विश्व रंग 2023 की झलकियों की प्रस्तुति के साथ विश्व रंग संगोष्ठी की शुरुआत हुई।

कार्यक्रम के आरम्भ में संगोष्ठी की संयोजक एवं संचालक डॉ शिप्रा शिल्पी सक्सेना, संस्थापक, वैश्विक हिंदीशाला (विहस, VHS),कोलोन ने मंचासीन अतिथियों का परिचय दिया। जर्मनी में हिंदी को लेकर हो रहे प्रयोगों पर चर्चा करते हुए डॉ शिल्पी ने कहा कि जर्मनी में इस क्षेत्र में अभी बहुत काम करने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति को लेकर यहाँ के भारतीय सजग हैं। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती की आराधना करते हुए उन्होंने स्वरचित गीत भी प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे – गूँज रही है कान में वीणा की झंकार, अर्पण है माँ आपको भावों का यह हार। अपने स्वागत वक्तव्य में मंच पर अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ जवाहर कर्नावट, सलाहकार, प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केंद्र ने कहा कि – विश्वरंगके पांचवे संस्करण के बाद हमने महसूस किया कि विश्व रंग का यह आयोजन वर्ष में एक बार ही क्यों? क्यों न हम 'एक माह में एक देश' के साथ विश्व रंग का आयोजन आभासी माध्यम से प्रत्येक माह आयोजित करें! । तत्पश्चात स्कोप ग्लोबल स्किल युनिवर्सिटी के चांसलर एवं विश्व रंग के सह संयोजक श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्व रंग के आयोजन के सन्दर्भ में उसकी अवधारणा और उद्देश्य को स्पष्ट किया। जर्मनी के कोलीन शहर में रहने वाली कर्नाटक की संगीतज्ञ एवं नृत्यांगना प्रियदर्शिनी द्वारक ने गुरु वंदना करते हुए संस्कृत श्लोक "गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु, गुरुर देवो महेश्वरा" का एवं "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" सुप्रसिद्ध भजन का वाचन में किया।

जर्मनी में रहने वाली विदुषी सुशील शर्मा 'हक' ने कहा कि भारत में प्रौढ़ शिक्षा संस्थान में अपनी सेवा देने के बाद बीस वर्षों से हिंदी के लिए सिखाने के लिए वे जर्मनी दूतावास में अध्यापन कार्य कर रही हैं। हिंदी भाषा की विविधता, आंचलिकता बोध पर उच्चारण को लेकर उन्होंने विस्तार से अपनी बात रखी।सुश्री अंजना सिंह ने कौशल विकास को लेकर चर्चा की। हैम्बर्ग की हिन्दी छात्रा अनस्थासिया ने नरेंद्र वर्मा की कविता "तुम चलो तो सही, मुश्किल है पर इतनी भी नहीं, दूर है मंजिल, " का पाठ किया। डॉ गौतम सागर जर्मन के हैनोवार शहर में इंजीनियर के पद पर कार्यरत 'फैंस ऑफ़ इंडियन डायस्पोरा' (FOID, हैनोवर) के संस्थापक हैं। हिंदी साहित्य में आगाध रुचि रखने वाले डॉ सागर ने कहा कि विदेश में रहते हुए हिंदी से जुड़ना हमेशा ही सुखद, खुशनुमा पल होता है। उन्होंने अपनी कविता "टूटे तने का जड़ से जुड़ना अच्छा लगता है, परदेस में रहकर हिंदी से जुड़ना सपना लगता है।" का वाचन किया। तत्पश्चात सुश्री अरुणा नारलीका ने अपनी कविता 'विकृति' का पाठ किया .कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि गौतम लुई (हिंदी रीडर, हाइडिल बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी) ने कहा कि आजादी के 75 वर्ष बाद हम प्रवासी भारतीय उनके समान हैं जो नए आकाश यानी विदेश में अपनी हिंदी वाणी तो साथ में लेकर गई है, परंतु उड़ान भरने में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं हो पाई है। कार्यक्रम के अंत में प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केंद्र की समन्वयक श्रीमती कान्ता रॉय ने विश्व भर से जुड़े साहित्यकारों, कला प्रेमियों, मंच पर विराजमान सभी अतिथियों और श्रोताओं का आभार प्रकट किया।

(रिपोर्ट – कान्ता रॉय)

लंदन में डॉ. अनामिका के कवि व्यक्तित्व पर केंद्रित कार्यक्रम

लंदन, 24 अप्रैल 2024: लंदन विश्वविद्यालय के सोएस(स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ़्रीकन स्टडीज़) द्वारा आयोजित साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हिंदी की प्रतिष्ठित लेखिका डॉ० अनामिका के कविता संग्रह 'टोकरी में दिगन्त' पर आधारित कविता पाठ और चर्चा शानदार रही। ज्ञातत्व हो कि सोएसअफ़्रीका, एशिया और मध्य पूर्व की भाषाओं और संस्कृतियों के अध्ययन के लिए विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान है।

पुरस्कृत लेखिका और टीसाइड विश्वविद्यालय में पीएच०डी० की छात्रा पार्वती सलिल द्वारा संचालित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सोएसके दक्षिण एशियाई अध्ययन की व्याख्याता डॉक्टर आनंदी राव ने की। दो घंटे लगातार चलने वाले इस कार्यक्रम में डॉ० अनामिका ने अपनी प्रतिनिधि कविताओं - दरवाज़ा, नमक, दलाईलामा, चुटपुटिया बटन के उत्कृष्ट पाठ से श्रोताओं को काव्य-रस में डुबो दिया। अनामिका जी की विशेषता है कि वे अपनी अधिकतर कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद स्वयं करती हैं, जिसके कारण उनकी कविताओं की मौलिकता, आंतरिक लयात्मकता और मोहिनी बनी रहती है। द्विभाषी पाठ काव्य-रस तो बिखेर ही रहा था, साहित्यिक श्रोताओं को अनुवाद की बारीकियाँ भी सिखा रहा था।

कवयित्री ने अंशु और उषा मिश्रा द्वारा अनूदित कविताओं का भी का पाठ किया। दोनों अनुवादक भी सत्र में उपस्थित थीं; जिन्होंने आंचलिक शब्दों के अनुवाद तथा अनुवाद से जुड़ी अन्य चुनौतियों और अनामिका जी के मार्गदर्शन का ज़िक्र किया। प्रश्नों के उत्तर देते हुए कवयित्री ने अति-पुरुषत्व अथवा अति-स्त्रीत्व(हाइपर मैस्क्यूलिनिटी/हाइपर फ़ेमिनिटी) को समाज की प्रगति में बाधक बताया। अति-पुरुषत्व को उन्होंने स्त्री–पुरुष में सार्थक संवाद न हो पाने का कारण बताया। आलोचना, कविता की शैलियों और कविता में 'ह्यूमर' जैसे अनेक विषयों पर भी अनामिका जी ने रोशनी डाली।

वातायन-यूके की संस्थापक और लेखिका दिव्या माथुर, अध्यक्ष मीरा कौशिक और ऑक्सफोर्ड बिज़निस कॉलेज के डायरेक्टर डॉ पद्मेश गुप्त प्रथम पंक्ति के श्रोताओं में थे। बीबीसी की पूर्व अध्यक्ष डॉ अचला शर्मा और सिने-इंक के संपादक और टीवी निर्माता परवेज़ आलम के अतिरिक्त बहुत से लेखक और शोध छात्र इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

(रिपोर्ट -ऋचा जैन, आईटी कंसलटेंट, लेखिका और वातायन की सक्रिय सदस्य)

विश्व परिक्रमा

9 अप्रैल को देश भर की साहित्यिक-शैक्षणिक संस्थाओं ने महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। इसी क्रम में श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर ने भी संगोष्ठी एवं परिचर्चा का आयोजन किया।

अखिल विश्व हिंदी समिति न्यूयॉर्क अमेरिका द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'सौरभ' का लोकार्पण दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज महाविद्यालय में हुआ।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में अप्रैल माह में दो महत्वपूर्ण पुस्तकों ('इंटीग्रेशन ऑफ़ भारत' तथा 'ए जिग जैग 'माइंड') का लोकार्पण सम्पन्न हुआ।

18 अप्रैल को पटना के रविंद्र भवन में नीदरलैंड से आए भोजपुरी लोकगायक राजमोहन सहित अनेक कलाकारों ने 'मिट्टी के धरोहर बॉय गिरमिटियाज' कार्यक्रम में प्रस्तुति दी।

16 अप्रैल को दिल्ली में भारत और इंडोनेशिया के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए इंडोनेशियाई नृत्य उस्ताद श्री डिडिक निनी थोवोक और उनकी मंडली द्वारा कमानी आडिटोरियम नयी दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक श्री कुमार तुहिन तथा भारत में इंडोनेशिया के राजदूत महामहिम इना कृष्णामूर्ति उपस्थित थे।

एक ऐतिहासिक कदम के तहत कुवैती रेडियो 21 अप्रैल 2024 से हर रविवार को रात 8:30 से 9:00 बजे तक हिंदी भाषा में कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। हिंदी कार्यक्रम एफएम 93.3 और एएम 96.3 पर प्रसारित किया जा रहा है। कुवैती रेडियो के इस कदम की काफी सराहना की गई। कुवैत में भारतीय दूतावास ने एक पोस्ट में कहा कि कुवैती रेडियो द्वारा हिंदी प्रसारण से सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा और दोनों देशों के बीच संबंध मजबूत होंगे।

स्वर्गीय सूरजपाल चौहान की पुस्तक का लोकार्पण

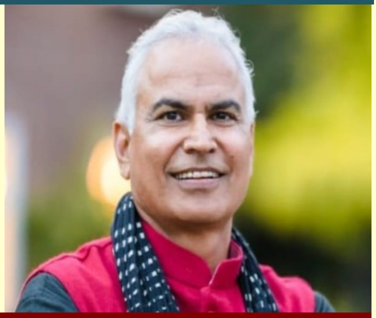

नीदरलैंड के प्रवासी लेखक रामा तक्षक को 'कृति कुसुम सम्मान' प्रदान किया गया।

साहित्य अकादमी में मनाया गया विश्व पुस्तक दिवस।

15 अप्रैल को मॉरिशस के रामायण सेंटर में रामनवमी मनायी गयी जिसमे मारीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री रूपन जी तथा कृषि मंत्री श्री सीरतन जी और भारत के महामहिम उच्चायुक्त तन्मय लाल जी उपस्थित रहे।

प्रवासी साहित्यकार डॉ. पद्मेश गुप्त की वाणी प्रकाशन ग्रुप द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों का लोकार्पण व विशिष्ट परिचर्चा का आयोजन इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नयी दिल्ली में किया गया। इस पुस्तक लोकार्पण में सुप्रसिद्ध कवि पद्मश्री अशोक चक्रधर एवं अन्य मूर्धन्य विद्वानों के साथ साथ वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने भी सहभागिता की।

प्रवासी मन

ब्रिटेन में हिंदी कविता के स्वरुप पर विचार करते हुए यह आवश्यक है कि उस ठोस संदर्भ को ओझल न होने दिया जाए जिसमें एक कवि अपनी रचना करता है। जिस सीमा रेखा पर खड़े होकर प्रवासी कविताएँ लिखी जा रही हैं वहाँ भी हमारी जातीय चेतना के दो छोर यानी ब्रिटेन और भारत अजब ढंग से घुले-मिले होते हैं। कई बार इस घुलावट को कवि जानता है और कई बार बिना जाने ही उसे अपने संपूर्ण बोध का हिस्सा बन जाने देता है।

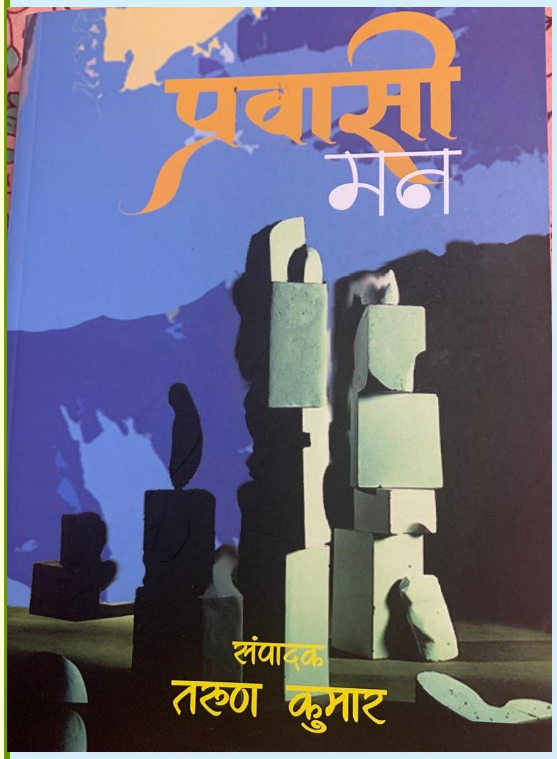

भारतीय प्रवासी हिंदी कवि के वास्तव बोध की यह ऐसी विशेषता है जो उसे पश्चिमी काव्य की संवेदना से अलग करती है।

इस संग्रह में कहानियों का चयन करते समय तरुण कुमार ने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि ये कहानियाँ किसी न किसी रुप में ब्रिटेन के जीवन या फिर प्रवासी द्वंद्व एवं संघर्ष का चित्रण सही ढंग से करती दिखाई दें। ये तमाम कहानियाँ उस भ्रम को तोड़ती दिखाई देंगी कि प्रवासी साहित्य के मूल में नॉस्टैल्जिया रहता है। ये कहानियाँ अपने समय और काल से टकराती दिखाई देती हैं और हिन्दी के पाठकों को एक नई दुनियाँ से परिचित करवाती हैं। इन कहानियों में भाषा या क्राफ़्ट के स्तर पर अधिक प्रयोग नहीं दिखाई देंगे मगर कहानी का कहानीपन अवश्य ही बरकरार रखा गया है। आज के माहौल में यह एक किस्म की नई ताजगी भी मानी जा सकती है।

दूसरी बात यह भी ध्यान देने लायक है कि ब्रिटेन की हिन्दी कहानी किसी प्रकार के विमर्श के दबाव में नहीं लिखी जाती । जो महसूस किया जाता है, वही पन्ने पर उतारा भी जाता है। उसका एक कारण भी है कि यहाँ का लेखक अपनी कहानी को नारेबाजी से बचाना चाहता है ।

ब्रिटेन का हिन्दी कथाकार ना तो दक्षिणपंथी है और ना ही वामपंथी। वह केवल और केवल कथाकार है। बेशक ब्रिटेन के हिन्दी लेखक जिस माहौल में रहते हैं वहाँ वामपंथी भगवान कार्ल मार्क्स की समाधि है I

तमाम कहानीकार पहली पीढ़ी के प्रवासी हैं और अब उन्हें ब्रिटेन में रहते हुए एक लंबा अरसा बीत चुका है। इन लेखकों का अनुभव क्षेत्र भी अब खासा विकसित हो चुका है। इनमें से कोई पाँच दशक से ब्रिटेन में रह रहा है तो कोई तीन दशक से।

इन लेखकों का निजी संघर्ष भी अस्तित्व को बचाए रखने का संघर्ष कभी नहीं था। ये सब साहित्यकार अपनी मर्जी से ब्रिटेन में बसने आए और यहाँ के होकर रह गए। और पिछले बीस पच्चीस वर्षों में तो इंटरनेट और वैब पर उपलब्ध समाचार पत्रों एवं टी वी चैनलों ने भारत और ब्रिटेन की दूरी मिटा दी है। जाहिर-सी बात है कि इस संकलन की रचनाओं में शायद इसीलिए नॉस्टैल्जिया जैसी भावना शायद ही देखने को मिले।

इस संकलन की एक विशेषता यह भी है कि कविताओं में सत्येन्द्र श्रीवास्तव की कविता 'विंस्टन चर्चिल मेंरी मां को जानते थे' और जाकिया जुबैरी की कहानी 'बेचारी इंडियट' राजनीति पर आधारित रचनाएँ हैं। ये रचनाएँ इस बात का उदाहरण हैं कि प्रवासी साहित्यकार अपनी रचनाओं के लिए केवल भारत से विषय नहीं लेता,वह अपने अपनाए हुए देश के साथ ना केवल जुड़ता है बल्कि यहाँ के जीवन की व्याख्या भी अपनी रचनाओं में करता है ।

इस संग्रह में वार्ष्णेय और ऋचा जैन भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। तरुण कुमार का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि हिन्दी साहित्यकारों की तमाम पीढ़ियों का साहित्य इस झरोखे से दिखाई दे। यह दावा तो शायद कोई भी संकलन नहीं कर सकता कि उसमें किसी शहर या देश का पूरा प्रतिनिधि साहित्य शामिल कर लिया गया है मगर यह अवश्य कहा जा सकेगा कि यदि आपको ब्रिटेन के हिन्दी साहित्य को एक झरोखे से देखने को मिले तो आप पाएंगे कि तरुण कुमार द्वारा संपादित यह संकलन 'प्रवासी मन' इस दावे के खासे करीब पहुंच जाता है।

(समीक्षक - प्रो.स्वाति श्वेता)

ओक्का-बोक्का उपन्यास

विनोद जी को ओक्का-बोक्का उपन्यास देने के लिए साधुवाद। पुस्तक प्रेमी मन को ऐसा लगा मानो कुआँ ही प्यासे के पास पहुँच गया हो। विनोद जी ने तीन दोस्तों की दोस्ती निभाने की कहानी के माध्यम से एक अनोखी दुनियाँ को जीवंत कर दिया है। इसे पढ़ते समय अपनी सहेलियाँ बहुत याद आईं। आधुनिक तकनीकी को धन्यवाद भी दिया जिसके माध्यम से एक-दूसरे से परिवार के सदस्य की तरह जुड़े हैं।

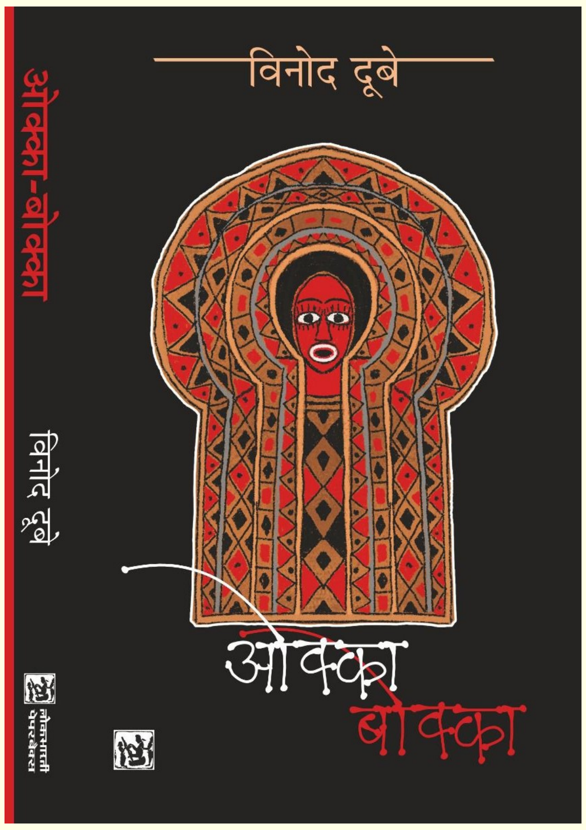

कहानी के मुख्य पात्र शरद की ज़िंदगी में पूर्णिमा का विशेष महत्व था। कारण जानने के लिए उपन्यास पढ़ना होगा। विनोद जी ने जन्मभूमि और कर्मभूमि से जुड़े अनुभवों का बहुत ही सजीव चित्रण किया है। कहानी से जुड़ाव इसलिए भी महसूस हुआ क्योंकि कई अनुभवों में समानता थी। यह सच है कि मिट्टी का अंतर अपने देश के प्रति प्रेम को कम नहीं करता है।

विनोद जी ने अपनी सशक्त लेखन-शैली द्वारा व्यस्तता के कारण पारिवारिक सम्बन्धों पर पड़ने वाले प्रभावों को बहुत ही ख़ूबसूरती से चित्रित किया है। पारिवारिक एकता के लिए किए जाने वाले प्रयासों का मार्मिक उल्लेख भी किया है। पिता-पुत्री में वैचारिक भिन्नता होने के कारण, पीढ़ी का अंतर कम करने के लिए किए गए सामंजस्य का वर्णन बहुत ही भावुक है।

इस उपन्यास में घटनाक्रम धाराप्रवाह की भाँति आगे बढ़ता है इसलिए अंत तक इसे पढ़ने में रुचि बनी रहती है। विनोद जी से बस एक ही अनुरोध है कि वे अपनी लेखनी को कभी विराम न दें।

लोकभारती (राजकमल समूह) द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास, आप भारत में आमेजन से और सिंगापुर में सीधे लेखक से संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं ।

(समीक्षक – सुधा जोशी)

विश्वशांति

हर सीमा पर गोलियां चल रहीं
धमाके हो रहे हैं शहर - शहर में
उपज रहीं परमाणु शक्तियाँ बड़े देशों में
खून के प्यासे जब हो रहे हैं मज़हबी
तब महाशक्तियाँ हाथों में सुई - धागा लिए
भाईचारे के फट चुके चिथड़ों को जोड़ने
शांति स्थापना के नाम खालीपन में
हवा के टुकड़ों को सीने में लगी हुई हैं।

- अभिमन्यु अनत

साक्षात्कार

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सतीश विमल कश्मीर में हिन्दी की मशाल जलाए हुए हैं। हिन्दी, कश्मीरी और उर्दू भाषाओं में एक साथ लिखते हैं। कवि, आलोचक, अनुवादक और कथाकार के रूप में इनकी अब तक बत्तीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें इनके हिन्दी के छ: कविता संग्रह शामिल हैं। इतिहास, दर्शन और संस्कृति-बोध से सराबोर इनकी रचनाएँ वर्तमान साहित्य जगत में इन्हें एक विलक्षण साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं। इनकी रचनाओं का कई भारतीय और अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। कश्मीर की ऋषि-सूफ़ी कविता पर इनके शोधकार्य को खूब सराहा गया है। सतीश विमल भारतीय सौंदर्य-शास्त्र के जाने-माने व्याख्याकार हैं। इनकी काव्य प्रतिभा की विभिन्न विशेषताओं पर देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने लिखा है जिनमें भीष्म साहनी, डॉ. हरिवंश राय बच्चन, अमृता प्रीतम, डॉ.पांडुरंगा राव,जयंत महापात्र,नामवर सिंह,गंगाप्रसाद विमल,रहमान राही आदि शामिल हैं। देश की कई प्रसिद्ध साहित्यिक एवं शैक्षिक संस्थाओं और अकादमियों के कई महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रोजेक्ट्स में सतीश विमल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्हें साहित्य अकादेमी, केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, जम्मू कश्मीर साहित्य-कला अकादेमी, जम्मू कश्मीर के राज्यपाल, प्रसार भारती, अखिल भारतीय उर्दू-हिन्दी संगम, वन्देमातरम समूह आदि कई प्रतिष्ठित संस्थाओं से सम्मानित किया गया है।

प्रश्न 1- आप कई विधाओं में एक साथ लिखते हैं तो आप स्वयं को मुख्यत: क्या मानते हैं- कवि, आलोचक, अनुवादक या एक सूफ़ी ?

उत्तर: बुनियादी तौर पर एक कवि जिसका सूफ़ी मिजाज़ है। जिन अन्य विधाओं में मेरी कलम चलती है वे सभी इस कवि की ताल पर नृत्य करतीं गोपियाँ हैं। मैं आलोचना लिखूँ, किसी कथा को जन्म दूँ, अनुवाद करूँ या किसी परिचर्चा में भाग लूँ, मेरा कवि मेरा मार्गदर्शन करता है, मेरे साथ रहता है।

प्रश्न 2- लेखन की प्रेरणा आपको कहाँ से मिलती है ? क्या किसी विशेष परिस्थिति, परिवेश की अपेक्षा होती है?

उत्तर: मेरे लिए लेखन मेरी अपनी ही प्रकृति के साथ मेरा प्रेम संबंध है। अत: मुझे लेखन की प्रेरणा अधिकतर मेरे अन्तस् से ही मिलती है, पर हाँ प्रकृति की बाह्य छटा भी इस रिश्तेदारी को यदा-कदा परवान चढ़ाती है। मैं जब भी अनुराग, प्रयोजन, पीड़ा, हर्ष, खोज, अथवा चित्त की उन्मत्तता की स्थिति में होता हूँ तो लेखन की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। मौन मेरे लिए उतना ही अनिवार्य है जितना मेरा अस्तित्व बोध मेरे लिए।

प्रश्न 3- आपकी दृष्टि में साहित्य क्या है ?

उत्तर : जब जीवन का संगीत नम आँखों का स्पर्श और प्यासे होंठों का गीत हो जाता है तो प्रकृति करिश्माई आशीष वर्षा की अमृत वर्षा करती है, इसी अमृत वर्षा से जन्मी ध्वनियों से जब शब्द आलिंगन बद्ध हो जाते हैं तो साहित्य समय का श्रृंगार हो जाता है। ऐसा साहित्य क्षणों में युगों का आनंद और संतुष्टि प्रदान करता है। जीवन के अँधेरे रास्तों में जितनी रोशनी का यह साहित्य संचार कर पाता है, उतनी ही इसकी गुणवत्ता सिद्ध होती है।

प्रश्न 4- आप कवि किसे मानते हैं ? क्या कवि वो है जो अत्यधिक संवेदनशील होता है या वो जो अधिक भावुक होता है ?

उत्तर: कवि वह सिद्ध है जो एक अलिखित सफ़ेद पन्ने से मुलाक़ात में व्हाइट बैलन्स के पार देख पाता है और इस करिश्मे को आकार देता है। अकवि भी संवेदनशील और भावुक होता है पर केवल कवि ही स्थानीयता के पार के सफ़र का आनंद ले पाता है और इस अनुभूति में औरों को शरीक करने की क्षमता रखता है।

प्रश्न 5- आप कविता को उर्स मानते है, क्या इसकी व्याख्या करेंगे ?

उत्तर: उर्स प्रेम का त्योहार होता है और कविता भी त्योहार ही तो है। उर्स की कल्पना भीतर से जन्म लेती है और बाहर उसी का नृत्य होता है। फिर उस नृत्य में दूसरे भी शरीक हो जाते हैं। कविता इसी तरह के आनंद के उर्स का प्रसाद है जो कवि बाँटता है।

प्रश्न 6- आपके लेखन के मूल में प्रेम है या वेदना ?

उत्तर: प्रेम और वेदना अलग हैं ही कहाँ? यह चित्त और अंतरचेतना के सोच के साधन हैं। मेरे लिए प्रेम और वेदना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

प्रश्न ७- क्या लेखन हेतु पढ़ना आवश्यक है या जीवन के कटु अनुभव ?

उत्तर: पढ़ना और जीवन के अनुभवों से सीखना या जानना खुद को बड़े फ़लक तक ले जाने के लिए बेहद ज़रूरी है, पर हाँ,यहाँ से केवल खाम-माल मिल सकता है जिसे पुख्ता करने के लिए अपनी चेतन की भट्टी में तपाना पड़ता है। साहित्य लेखन अख़बारी लेखन से भिन्न है। समय के गर्भ से छूटते ही साहित्य अकाल-मूरत हो जाता है और जो लेखन समय के गर्भ से छूट कर भी समय की ही क़ैद में ही घुटता है, वह साहित्य नहीं, समय-मूक बन कर रह जाता है।

प्रश्न 8- आपका बहुचर्चित कविता संग्रह 'ठूंठ की छाया' सन् 2012 में प्रकाशित हुआ था, इस ठूंठ की छाया में किसे पाते है ?

उत्तर: स्वंय को......कवि और कवि के भीतर और बाहर के अस्तित्व को, जिसमें मानव-इतिहास के कई अध्याय ज़िंदा हैं। देखें तो अपने काल के चंद क्षणों में अजय रहे चक्रवर्ती राज्य हों अथवा दरिद्रता के झोंपड़ों में घुट कर समाप्त हुए सपने हों.... दोनों इसी ठूंठ की छाया हैं जो अपने काल के इन अल्प-क्षणों के बाहर कोई सय न कर पाये। 'ठूंठ की छाया' एक आईना है, जिनमें मानव के अहंकार का बौनापन दिख जाता है।

प्रश्न 9- क्या 'खोये हुए पृष्ठ' विस्थापन की त्रासती में खो गए थे ?

उत्तर: मानव चेतना की विस्मृति में खो गए थे यह पृष्ठ। जीवन को जब यंत्रों और संकेतों में सीमित किया गया, तो उत्सवों का मर जाना स्वाभाविक था। इसी मृत्यु को जब इनाम की संज्ञा मिली, तो आनंद को खोजना स्वाभाविक था। युगों-युगों से पाप और पुण्य के भ्रमजाल में जब ज्ञान को फंसाया गया तो विवेक को ग्रहणग्रस्त होना ही था..... ऐसी परिस्थिति में किताब की गुलामी में स्वतंत्र अभिलेख नज़रन्दाज़ होने का एक लंबा दौर चला..... इसी दौर में खो गए थे यह पृष्ठ।

प्रश्न 10 – 'विनाश का विजेता' आप किसे मानते है? क्या यह राजनीति है या कट्टर धर्मिता या इनमें से कोई नहीं ?

उत्तर: 'विनाश का विजेता' वही है जो जीवन को टुकड़ों में नहीं बांटता। वही जो वाद, विचार, शिक्षा की चादर से प्रकृति को नहीं ढकता; स्वछंद जीवन को अपनी समस्तता के साथ जीने वाला ही विनाश का विजेता है। वही जो औरों के कहे को ही सत्य नहीं मानता; अपना सत्य खोजने वाला और उस सत्य के आनंद में उत्थान पाने वाला ही 'विनाश का विजेता' है। यह विजेता पहले का बना-बनाया हर ढांचा ध्वस्त करता है, हर उस तत्व का विनाश करता है जो उसके अपने चैतन्य से जुड़ा नहीं है और फिर अपने लिए सब कुछ बुनियाद से कलश तक स्वत: निर्मित करता है।

प्रश्न 11 –'नि:शब्द चीख के शिखर पर' कविता संग्रह में किस मौन-कोलाहल का अंकन है?

उत्तर: लाओत्से ने कहा था कि जो कहा जा सकता है, वह सत्य नहीं हो सकता और सत्य वही है जो कहा नहीं जा सकता। नि:शब्द चीख के शिखर पर ही सत्य का संगीत सुनाई देता है। यह वह मुकाम है जहां कहने-सुनने की हद पीछे रह जाती है और मौन ही संवाद करता है, मौन ही दृष्टिगोचर होता है, मौन का ही श्रवण होता है। निष्क्रियता इसी शिखर पर क्रिया का फल देती है।

प्रश्न 12 – 'नृत्य मौन का' आपकी बहुचर्चित काव्य-रचना है, मौन में मनुष्य कब नृत्य करता है?

उत्तर: मौन जब सध जाता है तो प्रकृति अपने भीतर समस्त छटाओं के साथ दिखाई पड़ती है। जैसे यह ब्रह्मांड प्रति-क्षण विस्तार पाता है, उसी प्रकार प्रकृति की छटाएं भी प्रतिपल विस्तृत होती जाती हैं। विस्तार की यह क्रिया परमानन्द की अवस्था को जन्म देती है। इस अवस्था में मौन का साधक अपने साथ और विस्तृत होती प्रकृति के तत्वों के साथ नृत्य में रम जाता है। इसी नृत्य से जन्म लेता है एक ऐसा संतोष जो खुशबू की तरह चहुं ओर फैल जाता है।

प्रश्न 13 –आपके विचार में साहित्य में समकालीनता से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: समय एक रेखीय नहीं है अपितु समय चक्राकार है। आदि से लेकर अनंत तक यह चक्र गतिशील है। हम इसी चक्र के एक अल्प भाग में जी रहे हैं, गतिमान हैं। हमारा समय बीते हुए कल और आने वाले कल से किसी भी सूरत पृथक नहीं है। हम जितना आज में हैं, उतना ही बीते कल से और आने वाले कल से जुड़े हैं। पर हम वर्तमान शिक्षा दृष्टि के चलते हर चीज को टुकड़ों में देखने के आदी हो गये हैं, इसीलिए हम ने समय को भी खंडों में बाँट कर देखने की प्रवृति को बढ़ावा दिया और काल-विभाजन की इस समझ के परिणाम-स्वरुप हम दृष्टि-विभाजन के शाप से ग्रसित हो गए। साहित्य आज का हो, बीते हुए कल का हो अथवा आने वाले कल का, यह हर क्षण का साहित्य है और हर समय प्रभावी और प्रासंगिक है। आज का साहित्य कल और कल के बीच का पल है, अत: इसे कैलेंडर के विशेष खांचों में कैद नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 14 – एक लेखक और अनुवादक आपस में कितना दूर होते है?

उत्तर: अनुवाद दो विभिन्न भाषाई इलाकों के बीच एक पुल है। यह पुल लेखक को नये अनजान पाठक वर्ग से परिचित कराता है। एक किनारे से पुल जितना दूर या पास होता है, उतनी ही दूरी या निकटता लेखक और उसके अनुवादक के बीच होती है। लेखक की तुलना में अनुवादक अधिक निष्काम कर्म करता है, दिखता नहीं है जबकि लेखक अपनी रचना के अनुवाद में भी विद्यमान रहता है।

प्रश्न 15 – क्या लेखक निष्पक्ष होना चाहिए परन्तु मनुष्य होना ही किसी के पक्ष में होना होता है। आप क्या समझते है?

उत्तर: पक्ष और निष्पक्षता का बोझ क्यों डालें कला पर। कला की नाजुकी को रहने दिया जाए। कोमल और मोहक गुलाब के फूल तेज हवाओं, बारिशों, गर्मी की तपिश और कांटों के बीच पलटे हुए खिलते हैं। देखने वाला, सुगंध महसूस करने वाला केवल सुंदरता के भांति-भांति के पैमानों के हिसाब से सराबोर होता है, वह नहीं सोचता तेज हवाएं, बारिशें, धूप की तपिश और कांटे। प्रकृति जिस तरह स्वछंदता की पर्याय है, उसी तरह स्वछंदता का स्वरूप है साहित्य का। लेखक प्रकृतिदूत है, वह पक्ष का बोझ क्यों ढोये।

प्रश्न 16 – एक अंतिम प्रश्न, चूँकि कश्मीर एक हिंदीतर क्षेत्र है, आप कश्मीर में हिंदी भाषा तथा साहित्य की क्या स्थिति देखते हैं?

उत्तर: कश्मीर में तीन दशकों से अधिक समय तक संकीर्णता का और आतंक का राज रहा। इस बीच कई तरह के अत्याचार हुए। समन्वय और सौहार्द का गला घोंटा गया। हिन्दी भी एक बड़ी आबादी के साथ घाटी से निष्कासित की गई। प्रकृति का नियम है कि किसी भी विपरीत परिस्थिति में किसी भी चीज का समूल नाश असंभव है। हिंदी विरोधी माहौल के बीच भी हिन्दी की कुछ गिनी चुनीं आवाजें कश्मीर में हिन्दी की अलख जगाती रहीं और अब जब हालात बदले हैं तो हिन्दी के पुनरुत्थान की उम्मीद भी जग गई है। आप जैसे प्रतिभावान हिन्दी सृजक और कितने ही युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं। यद्यपि वर्तमान अभी उतना उज्ज्वल नहीं दिख रहा, पर घाटी में हिन्दी के भविष्य की आशा से किसी को इनकार भी नहीं होगा।

साक्षात्कारकर्ता - डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

संरक्षक
अनिल शर्मा 'जोशी'

संपादक
डॉ. जयशंकर यादव

संपादन सहयोग
प्रो. स्वाति श्वेता, डॉ. अरविंद पथिक

तकनीकी सहयोग
कृष्णा कुमार

मुद्रक : आनंद प्रिंटर, नई दिल्ली -110055

प्रतिक्रिया और सुझावों के लिए
ई मेल : vhpatrika@gmail.com, फोन : +91 9448635109